विश्वविद्यालय के प्रथम स्थापना दिवस पर सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला का उद्घाटन समारोह - 22 अगस्त 2022

साधक से सिद्ध बनना हो विद्यार्थी का लक्ष्य : प्रो. रजनीश शुक्ल
प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट रचना मानने वाली जीवंत चिकिसा प्रणाली है आयुर्वेद
आयुर्वेद स्वर्ण में सुगंध की स्थिति लाने वाला नोबल प्रोफेशन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रथम स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज स्मृति सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला का शुभारंभ –

गोरखपुर, 22 अगस्त। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा (महाराष्ट्र) के कुलपति प्रो रजनीश शुक्ल ने कहा कि साधक से सिद्ध बनकर मानवता की सेवा करते हुए समाज और राष्ट्रहित में योगदान देना हर विद्यार्थी का लक्ष्य होना चाहिए। आयुर्वेद की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों के लिए लक्ष्य और भी खास हो जाता है क्योंकि वह चिकित्सा की उस प्राचीनतम पद्धति से जुड़े हैं जो हर व्यक्ति को एक विशिष्ट रचना मानने वाली जीवंत चिकित्सा प्रणाली है। आयुर्वेद का अध्ययन व इसके बाद का कार्य स्वर्ण में सुगंध की स्थिति लाने वाला नोबल प्रोफेशन है ।

प्रो. शुक्ल सोमवार अपराह्न महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम बालापार गोरखपुर के प्रथम स्थापना दिवस (28 अगस्त) के उपलक्ष्य में युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज स्मृति सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला के शुभारंभ पर बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। एलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेद की सारगर्भित व्याख्या करते हुए प्रो शुक्ल ने कहा कि आज सर्वत्र एलोपैथ नहीं बल्कि मॉडर्न मेडिसिन की डिग्री दी जाती है। एलोपैथ रोग से मुक्ति तक केंद्रित है जबकि आयुर्वेद रोग के निदान के साथ उन कारणों को भी खोजता है जिनसे आयु, बल, बुद्धि, विवेक का होता है और जिनसे कष्ट मिलता है। सभी प्रकार की पीड़ा से मुक्त ही आयुर्वेद का लक्ष्य है।

प्रो. शुक्ल ने कहा कि मॉडर्न मेडिसिन का विकास वास्तव में टेक्नोलॉजी का विकास है और ऐतिहासिक और सफलताओं के बाद भी इसने अपना रुतबा बना लिया है। कॉविड संकटकाल में पूरी दुनिया जान गई कि इसके वायरस के लिए आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इलाज नहीं है। तब सिर्फ बचाव पर जोर दिया गया। हम सभी जानते हैं की वायरस आइसोलेशन और सैनिटाइजेशन का ज्ञान आयुर्वेद में बहुत प्राचीन काल से है। चेचक, खसरा व छुआछूत की बीमारियों के होने पर नीम के पत्ते का इस्तेमाल इसी ज्ञान का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद के अनुसार कोई ऐसा द्रव्य, वनस्पति, जीव या रचना नहीं है जिसका औषधीय रूप में प्रयोग ना हो सकता हो। आयुर्वेद में एक ही द्रव्य से सात आठ प्रकार की

दवाएं तैयार होती हैं। यह आयुर्वेद की ताकत ही है की यूनाइटेड नेशंस ने स्वास्थ्य की परिभाषा के रूप में फिजिकल, मेंटल और सोशल हेल्थ के साथ अब स्प्रिचुअल हेल्प को भी स्वीकार किया है। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे आयुर्वेद की संहिताओं के गूढ़ ज्ञान को प्राप्त करने के लिए संस्कृत का अध्ययन अवश्य करें।

जीवन को गौरवशाली बनाने का महान अवसर

प्रो शुक्ल ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मेडिकल एवं पैरामेडिकल विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आपके पास अपने जीवन को गौरवशाली बनाने का महान अवसर है। यह आप सभी का सौभाग्य है कि आप की शिक्षा किसी सामान्य प्रोफेशनल संस्थान की बजाय महायोगी गोरखनाथ के नाम से सृजित इस विश्वविद्यालय में हो रही है। अपने नाम के अनुरूप ही यह विश्वविद्यालय अति विशिष्ट है और यह गोरक्षपीठ की महान संत परंपरा के विचारों से अनुप्राणित हो रही है। उन्होंने कहा कि अपनी श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद पर विश्वास रखते हुए अन्य चिकित्सा पद्धतियों की अच्छाइयों को भी स्वीकार करिए और समग्र चिकित्सा के क्षेत्र में श्रेष्ठतम योगदान दीजिए। प्रो शुक्ल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर बताए गए पंच प्रण को भी अपनाने की अपील की।

दासता से मुक्त होनी चाहिए शिक्षा : मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महायोगी विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल वाजपेयी ने कहा कि प्राचीन काल में हमारी सभ्यता बहुत उन्नत थी, आज हम सबके सामने उसे आगे बढ़ाने की चुनौती है। देश की गुलामी के दौर में, खासकर अंग्रेजी शासनकाल में शिक्षा को मूल्यों से दूर करने की कोशिश की गई। ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी ने इस विसंगति को पकड़ा। उनका स्पष्ट मानना था कि हमारी शिक्षा दासता से मुक्त होनी चाहिए। मूल्य परक और राष्ट्रीयता आधारित शिक्षा के लिए उन्होंने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के रूप में एक पौधा लगाया। आज यह विश्वविद्यालय उन्हीं के सद विचारों को आगे बढ़ा रहा है। कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन साध्वी नंदन पांडेय ने किया। प्रथम स्थापना दिवस के उद्घाटन समारोह में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव, गुरु गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डीएस अजीथा, गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के प्रो गणेश बी पाटिल डॉ प्रज्ञा सिंह, डॉ सुमित कुमार, डॉ दीपू मनोहर, डॉ पीयूष वर्षा, डॉ एसएन सिंह, डॉ जसोबेन, डॉ प्रिया नायर आदि की सक्रिय सहभागिता रही। मंच संचालन शांभवी शुक्ला व आशीष चौधरी ने किया। जबकि धनवंतरी एवं सरस्वती वंदना की प्रस्तुति दीक्षा, मांपी रॉय, साक्षी सिंह ने की। वंदे मातरम का गान मधुलिका सिंह,अंशिका जयसवाल,कहकशा, आसमा खातून, स्वाति सिंह ने किया। इस अवसर पर सभी शिक्षक व बीएएमएस प्रथम विद्यार्थी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
प्रथम स्थापना दिवस समारोह
युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज
स्मृति सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला
22 अगस्त, 2022
मुख्य अतिथि
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
कुलपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर
आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)
E-mail : mgyuniykp@gmail.com
Website : www.mgyu.ac.in